

विचार बिन्दु

अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। -मारकस

गरीबी पर चिंता बहुत, मगर बढ़ रही अमीरों की अमीरी

आ

जारी के बाद से ही हारो नेता गरीबों की हेपेसा चिंता की बातें ही नहीं करते रहे हैं, लिकिंग गरीबी और अमीर के बीच की खाड़ी को जाने के दावे लेकर भी सामने आते रहे हैं। एक समय गरीबी हटाओ बड़ा नारा हड़ा करता था जिस पर भरोसा करके अमान नेताओं को सता में बिठाया करती थी। कभी समाजवाद के जरिए गरीब की हालत सुधार कर उसके और अमीर के बीच की सोचा रेखा शिटाने के जरूर किये गये, तो कभी खुनी आधिक नियतों से सबको ज्ञानशील भरने के उम्र किये गये। बार घृण-प्रिय कर यही बात समने आई कि अमीरों की अमीरी और गरीबों की सेखा बढ़ रही है। अब वे केंद्रीय मंत्री नियम गड़करी का रूप से गरीबों की 'बत्ती' संख्या पर चिंता व्यक्त की है और कहा है कि "धोरे-धोरे गरीबों की सेखा बढ़ रही है और धन कुछ अमीर लोगों के हाथों में केंद्रित हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए।" उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था को इस तरह से बदलना चाहिए कि जेंगरार पैदा हो और ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान हो। उन्होंने भरोसा दिलाया कि "हम एक ऐसे आर्थिक कल्प पर चिंताकर कर रहे हैं जो रोजगार पैदा करेगा और अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देगा।"

जब कोई केंद्रीय मंत्री ऐसे आर्थिक कल्प को बात करता है तो जिसमें वैसी अर्थव्यवस्था बनाना हो जो रोजगार पैदा करे तब सबाल उठता है कि ऐसी अर्थव्यवस्था कौसी होगी और वे क्या बाधाएं हैं जो ऐसा नहीं होने देती? हर बार हम इसी रेच में फंस जाते हैं कि अर्थव्यवस्था लीक होगी तो रोजगार बढ़ेगा। हमारी अर्थव्यवस्था छत्ता लाभ कर द्विनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी है किंतु ये प्रधान मंत्री को अपने भाषणों में देश की 4.0 प्रतिशत आवादी को गरीब बताना पड़ता है। इससे उल्टा सोचा जाया रोजगार बढ़ेगे तब ही देश की अर्थव्यवस्था के साथ प्रति व्यक्ति आयी भी बढ़ेगी। इसके लिये जरूरी है कि देश के अधिक लोगों के हाथों में रोजगार पाना का हुनर दिया जाय ताकि वे देश की अर्थव्यवस्था में उत्पादक रूप से शामिल हो सकें। यह इसलिए जरूरी है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी घट कर 14 प्रतिशत रह गई है, दमर जारी की 4.0 प्रतिशत आवादी निर्भर रखती है। इस प्रायोगिक आवादी को अन्य उत्पादक क्षेत्रों में शिष्ट करना ही एक रासाना है। यह तभी हो सकता है जब उनके गुणवत्ता वाली प्राथमिक शिक्षा तथा काम-काज के हुनर को दक्षता का प्रशिक्षण मिले। अभी हमारी शिक्षा व्यवस्था भेद करती है। अमीर अपने बच्चों के लिए बहतर शिक्षा की व्यवस्था कर लेता है, मगर गरीब ऐसा नहीं कर पाता है जो अब उसके बच्चे फिसड़ी रह जाते हैं। ऐसे में क्या किया जाय? इसके लिए जाने-मारे जानसंख्याविद डॉ. देवेन्द्र कोठारी जो अपने लिए बहतर मौजूदा में किसी अलग प्रावधान की मांग नहीं करता, को देश-द्विनिया के अकादमिक क्षेत्रों में तो खुब सराहना मिलता किन्तु हमारे निवाचित प्रतिनिधियों को उसे देखने समझने की फुरसत नहीं मिली।

वैरिएट अनुभव से भी पता चलता है कि सामाजिक कल्पकों के पहलुओं पर अधिक ध्यान देने वाले देश मानव संसाधनों की गुणवत्ता को बढ़ाता है जब वार मानव विकास के स्तर को अपनाएं योग्यता देते हैं। यह भारत जैसे देश के लिए विशेष रूप से प्रायोगिक है। वर्ते ही विकास को बढ़ावा देने के लिए हारो नेताओं द्वारा ज्ञान-अर्थव्यवस्था (नॉलेज इकॉनोमी) के निर्माण की बातें बढ़-चढ़ कर की जाती रही हैं, किन्तु मानव संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार करने में देश पीछे रह गया है। यिन्हिंने किया जाय ताकि वे देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी घट कर 1.4 प्रतिशत रह गई है, दमर जारी की 4.0 प्रतिशत आवादी निर्भर रखती है। इस प्रायोगिक आवादी को अन्य उत्पादक क्षेत्रों में शिष्ट करना ही एक रासाना है। यह तभी हो सकता है जब उनके गुणवत्ता वाली प्राथमिक शिक्षा तथा काम-काज के हुनर को दक्षता का प्रशिक्षण मिले। अभी हमारी शिक्षा व्यवस्था भेद करती है। अमीर अपने बच्चों के लिए बहतर शिक्षा की व्यवस्था कर लेता है, मगर गरीब ऐसा नहीं कर पाता है जो अब उसके बच्चे फिसड़ी रह जाते हैं। ऐसे में क्या किया जाय? इसके लिए जाने-मारे जानसंख्याविद डॉ. देवेन्द्र कोठारी जो अपने लिए बहतर मौजूदा में किसी अलग प्रावधान की मांग नहीं करता, को देश-द्विनिया के अकादमिक क्षेत्रों में तो खुब सराहना मिलता किन्तु हमारे निवाचित प्रतिनिधियों को उसे देखने समझने की फुरसत नहीं मिली।

विकास सूचकांक (एचडीआई) रैंकिंग में भारत का स्थान 2022 में एक पायदान बढ़कर 134वें स्थान पर पहुंच गया, जो उसके बच्चों वर्षा पर एक पायदान ऊपर था। भारत मानव विकास की मध्यम श्रेणी में है और हाल के बच्चों में दिखाने के लिए हारो नेताओं द्वारा अर्थव्यवस्था बढ़ने की अपील आयी है। अब देशों को देखे हुए यह एक बड़ी गिरावट है। विकास के लिए विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किया है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रवृत्ति है। इसके लिए एक गहरा जड़ जया चुम्बक प्रवृत्ति है कि देश के बाबत रासाना अधिक धर्मीय व्यवस्था के लिए अचानक बढ़ती है। यह एक बड़ी गिरावट है। अब देशों की वैरिएट की अवधि